ध्रुवस्वामिनी शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणाओं को तो सह लेती है, किन्तु जब वह अनुभव करती है कि उसका आत्मसम्मान एवं सतीत्व खतरे में है तो उसका आत्म-गौरव सहसा जग उठता है जब उसे उपहार स्वरूप देकर राजा के पास भेजा जाने लगता है। ऐसा प्रस्ताव सुनकर वह बार-बार रामगुप्त के सामने गिड़गिड़ाती है। किंतु निष्ठुर रामगुप्त का हृदय नहीं पसीजता। वह उसे शकराज के पास के संकल्प पर दृढ़ है। अतः ध्रुवस्वामिनी के पास आत्मबल एवं आत्मरक्षा के अलावा कोई उपाय नहीं बचता। यहाँ नाटककार ने ध्रुवस्वामिनी के व्यक्तित्व का वह रूप प्रस्तुत किया है जो किसी भी नारी के लिए गर्व की वस्तु है। वह रामगुप्त को तत्काल ही फटकारती है— "निर्लज्ज! मद्यप!! क्लीब!!! ओह, तो मेरा कोई रक्षक नहीं। नहीं, मैं अपनी रक्षा स्वयं करूँगी। मैं उपहार में देने की वस्तु नहीं हूँ, शीतल मणि नहीं हूँ। मुझमें रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें सम्मान की ज्योति है, उसकी रक्षा मैं ही करूँगी।"

एकबार परिस्थितियों का बोध होते ही वह आत्मगौरव और आत्मरक्षा के लिए उठ खड़ी होती है। वह साहस और बुद्धिमता से आगे बढ़ते हुए पहले तो छुरी मारकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है किंतु चंद्रगुप्त के सहसा सामने आ जाने के कारण वह उस कठोर कर्म से विरत हो जाती है। चंद्रगुप्त को सामने देखकर उसके हृदय में मधुर भाव जग जाते हैं और सजग भाव उत्पन्न हो जाने से उसमें मोह का भाव आ जाता है। फिर वह विषम परिस्थितियों को टालने के लिए प्रस्तुत हो जाती है। चंद्रगुप्त पहले अकेले ही शकराज के पास जाना चाहता है, किंतु ध्रुवस्वामिनी की निडरता देखकर उसे भी अपने साथ चलने की अनुमति दे देता है। वे शक शिविर में अपने कौशल द्वारा शकराज की हत्या करने में सफल होते हैं।

विपत्तियाँ मानव जीवन की कसौटी है। जीवन का मूल्य संकट के क्षणों में और बढ़ जाता है। संकटों का-सामना करने से बुद्धिबल और आत्मबल में वृद्धि हो जाती है। ध्रुवस्वामिनी की स्वाभाविक साहसशील प्रवृत्ति का विकास आंतरिक और बाह्य संकटों का सामना करने से होता है। शकराज की विफलता से ध्रुवस्वामिनी की बुद्धि कौशल से सामन्त कुमारों को उत्तेजित कर देता है, वह उनकी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त करती है। वह बाह्य शत्रुओं को परास्त करने के पश्चात अपने प्रति किए गए समस्त अन्यायों का प्रतिकार करने के लिए कटिबद्ध हो जाती है। वह राजपुरोहितों के सामने अपने

जीवन की मार्मिक वेदना प्रकट करती है और उसकी सहानुभूति प्राप्त करती है। पुरोहित धर्मशास्त्र का अवलोकन कर निष्पक्ष निर्णय देता है — "विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रांतिपूर्ण बंधन में बाँध दिया है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।" ध्रुवस्वामिनी अपने प्रति हुए अन्यायों का प्रतिकार के लिए एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत करती है कि चंद्रगुप्त भी अन्यायपूर्ण राजकीय आदेश का प्रबल विरोध करता है। ध्रुवस्वामिनी चंद्रगुप्त से कहती है — "कुमार, मैं कहती हूँ कि तुम प्रतिवाद करो, किस अपराध के लिए दण्ड ग्रहण कर रहे हो ?" निःसंदेह ध्रुवस्वामिनी के प्रयत्नों से रामगुप्त और शिखर स्वामी की कूट मंत्रणाओं और कपटचारों की कलई खुल जाती है और उनका पराभव होता है। नारी अबला होकर भी सम्मान की रक्षा और अन्यायों का प्रतिकार कर अपने आत्मबल, निर्भिकता और बुद्धि कौशल द्वारा कितनी सफलता ले सकती है, इसका सफल निदर्शन ध्रुवस्वामिनी के चरित्र में हुआ है।

ध्रुवस्वामिनी का जीवन निरंतर संघर्षमय है, फिर भी वह हार नहीं मानती। वह ओजस्विनी एवं पुरुषार्थ-प्रेरक नारी है। वह हारना नहीं जानती। नारी हृदय भावुक कोमलता का निदर्शन उनके चरित्र में स्पष्ट है। उसके हृदय की मधुर भावनाओं का गला उसके उदयकाल में ही घोंट दिया जाता है जब उसका विवाह रामगुप्त जैसे क्लीव, कापुरुष से करवा दिया जाता है। रामगुप्त के कठोर नियंत्रण में उसके हृदय का मधुर स्रोत सूख जाता है, वह मरुस्थल के समान हो जाती है। किंतु चंद्रगुप्त की सहानुभूति, उत्सुकता एवं अनुराग उसके जीवन को फिर से हरा-भरा कर देता है। नाटककार ने उसके ओजस्वी व्यक्तित्व में उसके हृदय के मधुर पक्ष को भी उभारने की कोशिश की है। सचमुच, ध्रुवस्वामिनी में एक वीरांगना के साथ-साथ उसका नारीत्व का भी उचित विकास हुआ है। ध्रुव- के चरित्र में विकास पूर्ण स्वाभाविकता एवं भमता की भी भावना दिखायी देती है। ध्रुवस्वामिनी के चरित्र में नाटककार को भरपूर सफलता मिली है।

U.G. B.A. Part-I
Hindi (Hon)

"Dhruvswamini ka charitra chitran"